

सुदर्शन चक्र

प्रश्न:-1. भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग के "सुदर्शन चक्र"में क्या अंतर है?

(यह प्रश्न आत्मिक दृष्टि से बहुत शक्तिशाली अंतर को स्पष्ट करता है।)

पहले समझें:

"सुदर्शन चक्र"

शब्द का मूल अर्थ

सुदर्शन = श्रेष्ठ (सु) दर्शन

चक्र = चक्र / घूमती हुई स्मृति या स्थिति

इस प्रकार, सुदर्शन चक्र का अर्थ हुआ:

"ऐसी दिव्य बुद्धि जो सम्पूर्ण सृष्टि चक्र (84 जन्मों) को स्पष्ट रूप से देख सके"

– और उससे आत्म-स्वरूप की स्मृति जागे।

भक्ति मार्ग में सुदर्शन चक्र क्या है?

1. एक भौतिक अस्त्र – जिसे भगवान विष्णु के हाथ में दिखाया गया है।
2. इसे शत्रुओं को नष्ट करने वाला दिव्य हथियार माना गया है।
3. इसकी पूजा होती है, उसका ध्यान किया जाता है, लेकिन इसे कोई घुमा नहीं सकता, न ही कोई इसका आध्यात्मिक अर्थ जानता है।
4. सिम्बॉलिक पूजा है – आत्म अनुभव नहीं है।
5. भावना प्रधान मार्ग है – ज्ञान व अनुभव नहीं।

ज्ञान मार्ग (BK) में सुदर्शन चक्र क्या है?

यह कोई भौतिक चक्र नहीं, बल्कि बुद्धि में घूमने वाला आत्मिक ज्ञान है:

➤ मैं आत्मा कौन हूँ?

- मैंने 84 जन्म कैसे लिए?
- सतयुग से कलियुग तक कैसे गिरा?
- अब मैं संगम युग पर बाबा से पुनः श्रेष्ठ बन रहा हूँ।

यही चक्र जब बुद्धि में घुमाते हैं, तो आत्मा “सुदर्शन चक्रधारी” कहलाती है।

Murli quote: “सुदर्शन चक्रधारी वे हैं जो 84 जन्मों के चक्र को बुद्धि में घुमाते हैं और स्वदर्शन अर्थात् आत्मा को देखते हैं।”

तुलना सारणी: भक्ति मार्ग vs ज्ञान मार्ग में सुदर्शन चक्र

विषय	भक्ति मार्ग	ज्ञान मार्ग (BK)
स्वरूप	भौतिक अस्त्र (भगवान विष्णु के हाथ में)	आत्मा की बुद्धि में ज्ञान का चक्र
उपयोग	पूजा, ध्यान, रक्षा की याचना	ज्ञान का स्मरण, आत्म-अनुभव, वैराग्य
उद्देश्य	शत्रु विनाश की प्रतीक भावना	विकर्म विनाश और स्वरूप स्मृति
परिणाम	श्रद्धा, भावना, परन्तु निर्बलता	जागृति, शक्ति, स्व-परिवर्तन
अधिकार	कोई नहीं घुमा सकता	हर आत्मा घुमा सकती है (जो ज्ञान को धारण करे)
समय	कलियुग-भक्ति काल	संगम युग – परमात्मा से सीधा ज्ञान

निष्कर्ष:

भक्ति मार्ग में सुदर्शन चक्र पूजा की वस्तु है।

ज्ञान मार्ग में सुदर्शन चक्र आत्मा की जागृत अवस्था है।

❑ भक्ति मार्ग में भगवान को सुदर्शन चक्रधारी कहा जाता है।

❑ ज्ञान मार्ग में हर आत्मा स्वयं सुदर्शन चक्रधारी बन सकती है।

(सा,मु,-04-06-25) “बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी कहलाते हैं क्योंकि सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानना - यह है स्वदर्शन चक्रधारी बनना। यह बातें सिवाए बाप के और कोई समझा न सके।”

प्रश्न:-2. स्वदर्शन चक्रधारी कौन बनता है?

"स्वदर्शन" का अर्थ:

स्व-दर्शन = आत्मा का सच्चा स्वरूप देखना

चक्र = 84 जन्मों का सम्पूर्ण सृष्टि-चक्र

स्वदर्शन चक्रधारी वह आत्मा है जो स्वयं को आत्मा रूप में जानती है, और बुद्धि में सम्पूर्ण सृष्टि चक्र को घुमा सकती है।

कौन बन सकता है स्वदर्शन चक्रधारी?

केवल ब्राह्मण आत्माएं यानी वे आत्माएं जो संगम युग पर ब्रह्मा बाबा के मुख द्वारा शिवबाबा से ज्ञान ले रही हैं।

ये हैं ब्रह्मा मुख वंशावली आत्माएं —जो ईश्वर से प्रत्यक्ष पढ़ाई पढ़ रही हैं।

देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र क्यों नहीं?

क्योंकि:

वे तो पुराने जन्मों की आत्माएं हैं जो सतयुग, त्रेता, द्वापर, या कलियुग में हैं

उन्हें सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं होता वे स्वयं को आत्मा नहीं, देह मानते हैं

केवल संगम युग की ज्ञान-प्राप्त ब्राह्मण आत्माएं ही स्वदर्शन चक्रधारी बनती हैं

मुरली के महावाक्य:

“स्वदर्शन चक्रधारी वही बनते हैं, जो स्व-रूप और सम्पूर्ण सृष्टि चक्र को बुद्धि में घुमा सकते हैं। यह ज्ञान कोई देवता को भी नहीं होता – यह विशेषता ब्राह्मणों की है।”

निष्कर्षः

स्थिति	स्वदर्शन चक्रधारी
शारीरिक पूजा	□ नहीं
देवता आत्माएं	□ नहीं
शूद्र आत्माएं	□ नहीं
ब्राह्मण आत्माएं (BK)	हाँ

प्रश्न:-3. कैसे बनता है स्वदर्शन चक्रधारी?

"स्वदर्शन चक्रधारी" बनने का अर्थ है-अपने आप को और सम्पूर्ण सृष्टि को जान लेना।

स्व = "मैं कौन हूँ?"

➡ जब आत्मा अपने सच्चे स्वरूप को पहचानती है कि मैं शरीर नहीं — शुद्ध, शांत, प्रेमस्वरूप आत्मा हूँ।

➡ □ मैं वही आत्मा हूँ जो

84 जन्मों का नायक पात्र बनकर इस अनोखे सृष्टि-नाटक में बार-बार आई हूँ।

दर्शन = "देखना"

पर किसे?

➡ □ अपनी आत्मा की यात्रा को

➡ □ अपने कर्मों के लेखे-जोखे को

➡ □ सृष्टि के चक्र को — बुद्धि की आंख से देखना।

यह भक्ति मार्ग की आंखों से देखना नहीं, यह ज्ञान-नेत्र से देखने की शक्ति है।

चक्र = "पूरा 5000 वर्ष का विश्व नाटक"

➡ □ सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग

➡ □ और फिर पुनः संगम युग का आगमन —

यह चक्र कैसे चलता है, क्यों चलता है, कब परिवर्तन होता है —

इस सम्पूर्ण रहस्य को जानना ही चक्रधारण है।

तो स्वदर्शन चक्रधारी बनने का सार ये है: "जो आत्मा स्वयं को, परमात्मा को, और सम्पूर्ण सृष्टि चक्र को जान लेती है — वही सच्चा स्वदर्शन चक्रधारी कहलाती है।"

यह ज्ञान कैसे मिलेगा?

⇒ न पूजा से

⇒ न वेदों से

⇒ न ध्यान से

⇒ न ही किसी गुरुसे

यह ज्ञान मिलेगा —सिर्फ शिवबाबा से, ब्रह्मा के माध्यम से, संगम युग पर।

“स्वदर्शन चक्र शिवबाबा की श्रीमत पर ही धारण होता है,

क्योंकि वही बाप सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त को जानते हैं।”

निष्कर्ष:

स्वदर्शन चक्रधारी बनना=ज्ञान में पारंगत बनना

1. बुद्धियोग को सृष्टि की पुनरावृत्ति में लगाना
2. अपने स्वरूप और कर्मों का साक्षी बनना

प्रश्न:-4. कौन बनाता है स्वदर्शन चक्रधारी?

जब आत्मा बार-बार यह प्रश्न करती है –

"मैं कौन हूँ? मैं क्यों जन्म लेती हूँ? इस संसार की सच्चाई क्या है?"

तब कोई उत्तर नहीं मिलता...

लेकिन एक क्षण आता है —“जब परमपिता परमात्मा स्वयं उतरते हैं इस धरती पर। अव्यक्त रूप से, ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर... और कहते हैं...“मीठे बच्चे, मैं आया हूँ तुम्हें तुम्हारा वास्तविक परिचय देने... तुम आत्माएं हो — शुद्ध, शांत, शक्तिशाली। तुम मेरी सन्तान हो।”

तब बाबा हमें देता है —स्वदर्शन चक्र।

यह कोई लौकिक शस्त्र नहीं,

यह है आत्मा की जागृति का सबसे शक्तिशाली यंत्र।

जिससे आत्मा देख सके —

अपना स्वरूप, अपना 84 जन्मों का खेल, और सम्पूर्ण सृष्टि की पुनरावृत्ति।

केवल वही आत्माएं —जो ब्रह्मा के मुख से यह दिव्य ज्ञान सुनती हैं,

जो श्रीमत पर चलते हैं, वही बनते हैं —स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण।

और यह चक्र कौन पहनाता है?

स्वयं परमात्मा शिव — जो कभी जन्म नहीं लेते, पर हर आत्मा को उनका सच्चा स्वरूप दिखाते हैं।

और यही बनता है — कलियुग से सतयुग में जाने का ब्रह्मास्त्र।

"क्या आप तैयार हैं स्वदर्शन चक्रधारी बनने के लिए?"

"आज ही बाबा से ज्ञान लो, और अपने स्वरूप को पहचानो।"

प्रश्न:-5. स्वदर्शन चक्रधारी कब बनते हैं?

क्या आप जानते हैं...

स्वदर्शन चक्रधारी कोई कल्पना नहीं,

यह उस आत्मा की पहचान है —जो खुद को, और पूरे सृष्टि-चक्र को जानती है।

लेकिन यह चक्र कभी भी नहीं मिलता...

न भक्ति में, न सतयुग में, न त्रेता में...

यह केवल एक ही युग में मिलता है —

और वह है:

“संगम युग”

जब परमात्मा स्वयं इस धरती पर आते हैं।

संगम युग — जहाँ आत्मा

“मैं कौन हूँ?” यह जानती है।

जहाँ विकर्मों का नाश होता है,

और आत्मा फिर से बनती है — सतोप्रधान।

यही वह युग है जब आत्मा को मिलता है “स्वदर्शन चक्र” —अपने 84 जन्मों का चक्र जानने की शक्ति,

और परमात्मा की याद से स्वयं को पावन बनाने की विधि।

संगम युग ही वह श्रेष्ठ समय है, जब आत्मा एक सामान्य से दिव्य बनती है।

और यही बनता है उसका “चक्रवर्ती भाग्य”।

“सिर्फ संगम युग में बनता है स्वदर्शन चक्रधारी।

क्या आपने उसे धारण किया है?”

– शिवबाबा का दिव्य बुलावा है, सुनिए, समझिए, बन जाइए।

प्रश्न:-6. स्वदर्शनचक्रधारी बनने से क्या लाभ होता है?

क्या आपने कभी सोचा...

एक आत्मा जब स्वदर्शन चक्रधारी बनती है — तो उसके जीवन में कैसी क्रांति आती है?

- ❖ वो आत्मा विकारों पर विजय पा लेती है।
 - ❖ देहाभिमान, क्रोध, लोभ — सब शान्त हो जाते हैं।
 - ❖ वो आत्मा फिर से बनती है — सतोप्रधान,
 - ❖ पावन, शुद्ध और शक्तिशाली।
 - ❖ कर्म तो होते हैं, लेकिन आत्मा बंधती नहीं —
 - ❖ क्योंकि वह पहुँच जाती है कर्मातीत अवस्था में।
 - ❖ और सबसे बड़ा लाभ?
 - ❖ विकर्म विनाश — बाप की याद से
- पुराने जन्मों के पाप भी समाप्त हो जाते हैं।
- ❖ यही आत्मा फिर बनती है — लक्ष्मी-नारायण जैसे राजा।
 - ❖ और पाती है बाप से — शांति और सुख का वर्षा।

स्वदर्शन चक्र कोई धातु नहीं,

यह तो है आत्मा की ज्ञान और याद की शक्ति।

"स्वदर्शन चक्रधारी बनो... और अपने भाग्य को राजयोगी बनाओ।"

प्रश्न:-7. . क्या परमात्मा सुदर्शन चक्रधारी है? तो क्यों और कैसे?

उत्तर (ब्रह्माकुमारी ज्ञान अनुसार):

हाँ, परमात्मा शिव को भी "स्वदर्शन चक्रधारी" कहा जाता है— परंतु यह भौतिक चक्र नहीं बल्कि ज्ञान रूपी चक्र है।

स्वदर्शन चक्र का असली अर्थ:

"स्व-दर्शन चक्र" अर्थात् अपने स्वरूप (आत्मा) और सृष्टि चक्र (सतो-रजो-तमो की अवस्था) का दर्शन और ज्ञान होना।

यह कोई हथियार या युद्ध का चक्र नहीं है।

यह "ज्ञान का चक्र" है जो बुद्धि में घूमता है।

क्यों परमात्मा सुदर्शन चक्रधारी कहलाते हैं?

सृष्टि चक्र का सम्पूर्ण ज्ञान: सिर्फ परमात्मा शिव ही हैं जो इस 84 जन्मों के चक्र, सतो-रजो-तमो की स्थिति, और आत्मा के अवतरण को स्पष्ट रूप से समझाते हैं।

आत्मा को स्व-रूप का दर्शन कराते हैं:

परमात्मा हमें "मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं" इस देही-अभिमानि स्थिति में स्थित कराते हैं।

ज्ञान से विकर्म विनाश: यह चक्र जो शिव बाबा ज्ञान रूप में देते हैं — वह हमारे पुराने विकर्मों को भस्म कर देता है।

कैसे परमात्मा सुदर्शन चक्रधारी बनाते हैं?

ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान देना: परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर हमें आत्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं।

बुद्धि में घुमाते हैं यह चक्र:

जो आत्मा को उसका रूप (शान्त स्वरूप, ज्ञान स्वरूप) दिखाता है।

साथ ही यह ज्ञान देता है कि हम ब्राह्मण से देवता बनेंगे → फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
→ और फिर ब्राह्मण बनकर यही चक्र पूरा होता है।

लाभ क्या है सुदर्शन चक्रधारी बनने का?

विकर्म विनाश – आत्मा पावन बनती है।

कर्मातीत स्थिति – बन्धनों से मुक्त।

स्वराज्य अधिकार – सतयुग-त्रेतायुग के देवता पद की प्राप्ति।

अज्ञान अंधकार से मुक्ति – आत्मा साक्षात्कार की स्थिति को प्राप्त करती है।

निष्कर्ष:

परमात्मा शिव सुदर्शन चक्रधारी हैं – ज्ञान के द्वारा, न कि किसी भौतिक हथियार से।

वे हमें भी स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं ताकि हम अपने 84 जन्मों के चक्र, अपने असली आत्मिक स्वरूप और विश्व-चक्र के रहस्य को जानकर संसार में श्रेष्ठ आत्मा बन सकें।

प्रश्न:-8. सुदर्शन चक्र चलाने की विधि क्या है?

"सुदर्शन चक्र" चलाना = "स्वदर्शन चक्र" को बुद्धि में घुमाना

इसका अर्थ है:अपने "स्व" (आत्मा) का दर्शन करना, और सृष्टि चक्र (84 जन्मों का चक्र) को ज्ञान रूप में बुद्धि में घुमाना।

विधि: सुदर्शन चक्र चलाने की सहज विधि

1. देही-अभिमानि स्थिति में स्थित होना

"मैं आत्मा हूँ, यह शरीर मेरा वस्त्र है।"

अपने को शरीर नहीं, आत्मा समझो।

इससे तुम "स्वदर्शन" की यात्रा पर प्रवेश करते हो।

2. सृष्टि चक्र को याद करो (ज्ञान रूपी चित्र बुद्धि में लाओ)

चार युग – चार आत्मिक अवस्थाएँ:

सतयुग – देवी-देवता, सतोप्रधान।

त्रेतायुग – क्षत्रिय, सतो-राजो।

द्वापर – वैश्य, रजोगुणी।

कलियुग – शूद्र, तमोगुणी।

संगमयुग – ब्राह्मण, परिवर्तन का युग।

1. यह पूरा चक्र 5000 वर्ष का है।

2. हर आत्मा इस चक्र में प्रवेश करती है और अभिनय करती है।

3. 5 सेकंड में यह चक्र बुद्धि में घुमाओ।

3. आत्मा के 84 जन्मों का स्मरण करो

"मैं वही आत्मा हूँ जिसने पहले सतयुग में देवता बन श्रेष्ठ कर्म किए...

फिर त्रेतायुग में राजा बना...

फिर द्वापर में धर्मात्मा...

और अब तमोगुणी बन चुका हूँ...

अब संगमयुग है – वापसी का समय है..."

इस स्मृति से आत्मा में गहराई, वैराग्य और पुनः पावन बनने की शक्ति आती है।

4. परमात्मा शिव को स्मृति में लाओ (सर्वश्रेष्ठ ज्ञानदाता)

"यह ज्ञान का चक्र मुझे कोई मनुष्य नहीं, खुद परमात्मा शिव सिखा रहे हैं।

वही सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञानदाता है।"

परमात्मा को याद करते हुए चक्र घुमाओ – इससे विकर्म जलते हैं।

5. इस चक्र को बार-बार दिन में घुमाओ

उठते, चलते, काम करते, भोजन करते...

हर 1 घंटे में 1 मिनट: "मैं आत्मा हूँ... यह मेरा 84 जन्मों का नाटक है... अब घर जाना है।"

इसे ही बाबा कहते हैं: "बुद्धि का योग और ज्ञान-चक्र को चलाना।"

अभ्यास सुझाव (Daily Drill):

समय अभ्यास

सुबह अमृतवेले 5-10 मिनट: सृष्टि चक्र का स्मरण + आत्मिक स्थिति

दिन में हर 1 घंटे 1 मिनट: चक्र घुमाओ – "मैं कौन? कहाँ से आया? कहाँ जाना है?"

रात्रि में सोने से पहले 5 मिनट: आज का कर्म लेखा और चक्र में अपनी स्थिति देखो

सुदर्शन चक्र चलाने के लाभ:

विकर्म विनाश – क्योंकि आत्मा बाबा की याद में और सत्य ज्ञान में स्थित होती है।

स्वराज्य अनुभव – मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ आपकी आज्ञा में रहने लगती हैं।

पुरुषार्थ तीव्र होता है – आत्मा की यात्रा स्पष्ट होती है।

कर्म बंधन कटते हैं – क्योंकि ज्ञान और योग से आत्मा हल्की और मुक्त होती जाती है।

सदा सुरक्षा अनुभव होती है – जैसे विष्णु को सुदर्शन चक्र से कोई नहीं छू सकता।

सार:

सुदर्शन चक्र चलाना = अपने आत्मिक स्वरूप + 84 जन्मों की यात्रा + परमात्मा की याद में स्थित होना।

यह कोई बाहरी हथियार नहीं, बल्कि बुद्धि का सबसे शक्तिशाली योगिक अभ्यास है।

प्रश्न:-9. सुदर्शन चक्र से विकर्म कैसे कटते हैं? (ब्रह्माकुमारी ज्ञान के आधार पर एक गहराई से उत्तर)

पहले समझें: "विकर्म" क्या होता है?

विकर्म = ऐसा कर्म जो श्रीमत के विरुद्ध हो, जो आत्मा को बंधन में डालता है, दुख देता है, और जो पापफल रूप में सामने आता है।

ब्रह्माकुमारियों में विकर्म 3 प्रकार से समझाया जाता है:

1. अज्ञानवश किए गए कर्म (धर्म का ज्ञान न होने से)
2. बॉडी कॉन्शस होकर किए गए कर्म
3. इन्द्रियों या वासनाओं के वश में आकर किए गए कर्म

अब मुख्य प्रश्न:

जब सुदर्शनचक्रचलाते हैं, तो विकर्म क्यों और कैसे कटते हैं?

इसका उत्तर है – क्योंकि सुदर्शन चक्र चलाना 3 शक्तियों का संयुक्त योग है:

1. ज्ञान शक्ति से अज्ञान विनाश

जब हम सुदर्शन चक्र (84 जन्मों के चक्र का स्मरण) घुमाते हैं,

तो आत्मा अपने "स्वरूप" और "पूरा इतिहास-भविष्य" को याद करती है।

अज्ञान मिटता है, जिससे आत्मा के गलत कर्म (विकर्म) की जड़ कटती है।

Murli quote:

"जब तुम ज्ञान चक्र को बुद्धि में घुमाते हो, तो आत्मा जागृत होती है – अज्ञान अंधकार समाप्त होता है।"

2. योग शक्ति से विकर्म भस्म

जब आत्मा "स्वदर्शन" करती है और साथ-साथ बाबा को याद करती है,

तो आत्मा पर जो विकर्मों की कालिमा है, वह सूर्य समान शिवबाबा की याद से जलती जाती है।

यह आत्मा का दिव्य "Powerful Remembrance Mode" है।

Murli quote: "जितना ज्ञान और योग – उतना विकर्म विनाश।

जैसे सोने को आग में डाला जाए तो कचरा जल जाए।"

3. वैराग्य और परिवर्तन शक्ति

सुदर्शन चक्र चलाते समय आत्मा अपने नीचे गिरने की यात्रा को देखती है –

सतयुग से कलियुग तक का पतन...

इससे स्वाभाविक वैराग्य उत्पन्न होता है – "अब और नहीं!"

तब आत्मा श्रेष्ठ कर्म की ओर मुड़ती है, और विकर्मों को दोबारा करने से बच जाती है।

निष्कर्ष:

सुदर्शन चक्र = ज्ञान + योग + वैराग्य की शक्ति

यह आत्मा को past karmic burden से मुक्त करता है

और present & future को पावन बनाता है

छोटा अभ्यास:

"मैं आत्मा हूँ... मैं वही सतोप्रधान आत्मा हूँ जिसने 84 जन्म पूरे किए हैं... अब शिवबाबा के ज्ञान से पुनः पावन बन रहा हूँ... अब मेरे विकर्म विनाश हो रहे हैं... मैं मुक्त आत्मा बन रहा हूँ..."

(संदर्भ):

"सुदर्शन चक्रधारी वही जो ज्ञान चक्र बुद्धि में घुमाते हैं।"

“योग अग्नि से विकर्म भस्म हो जाते हैं।”

“ज्ञान और योग का बल ही विकर्म विनाशक है।”